हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

मेघदूत में प्रकृति चित्रण

महेश कुमार अलेंद्र

प्रस्तावना –

प्रकृति मानव की प्रारंभिक सहचरी रही हैं, जब से मानव ने इस भूपटल में जन्म लिया है, तभी से वह प्रकृति के साहचर्य में आया है। वह सूर्य चंद्रादि से प्रकाशित हुआ है, वृक्षों ने उसे छाया प्रदान कि है, भूमि ने उसे अन्न दिया है, झरनों ने उसे शीतल जल प्रदान किया है एवं समुद्र ने उसे रत्न दिए है, अतः मानव एवं प्रकृति का निरंतर संयोग रहा है। इसी सुन्दर प्रकृति ने उसे यदाकदा झंझावत, उत्पल–वर्षा व तिमिर से भयभीत एवं अस्थिर किया और इन सबके कारण उसने परमेश्वर का सहारा लेकर भय व कम्पन से छुटकारा पाने का प्रयास किया है, यही कारण है कि जगत के आदि ग्रंथो से ही हमें इंद्र, सूर्य, वरुण, चन्द्र, वायु, एवं पृथ्वी विषयक, गुणगान मिलते है। ऋग्वेद के ही एक मंत्र में इंद्र द्वारा पर्वतो को अचल करने, कम्पित पृथ्वी को स्थिर करने व गगन मण्डल को सँभालने का सुन्दर वर्णन मिलता है–

यःपृथ्वी व्यथमानामदृढं यः घौ पर्वतान्प्रकुपितां अरम्णादः ।
यो अन्तरिक्ष विषमे वरीयो यो द्यामस्तभनात्स जनास इंद्रः ।। 1

प्रकृति शब्द "प्र" उपसर्ग " कृ " धातु में क्तिन (स्त्री) प्रत्यय करने से निष्पन्न हुआ है । इस का आशय किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति माया, जड–जगत, स्वाभाविक रूप, नैसर्गिक स्वभाव, मिजाज, स्वभाव आदत, बनावट, रूप, आकृति वंश परम्परा मूल श्रोत इत्यादि से है । वैसे प्रकृति शब्दमें " प्र "का अर्थ हुआ उत्तम और कृति का अर्थ हुआ रचना या सर्वोत्कृष्ट रचना । जिसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–"प्रकृति ईश्वर (परमात्मा) की वह सर्वोत्तम रचना है, जिसके निर्माण में मानव कि कोई भूमिका नहीं है।" प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक भारतीय चिंतन धारा के अंतर्गत दोनों का संचालन एक ही प्रकार से होता रहा है । अतः मानव और प्रकृति के मध्य पाए जाने वाले साहचर्य की अभिव्यक्ति करना कवियों का प्रिय व मधुर विषय रहा है। 2

संकेतक शब्द – झंझावत – बिजली, तिमिर, अंधकार, प्रकृति– उत्तमकृति, दशार्ण–दिशाओं, माल प्रदेश, मालवा।

अध्ययन का उद्देश्य –

- प्रकृति का वर्तमान दशा एवं प्राचीन भारतीय चिंतन विचार धारा का अध्ययन करना।
- मानव और प्रकृतिक सौदर्य के संबंधों का अध्ययन।
- प्राकृतिक आपदाओं का शास्त्रीय अध्ययन।

ISSN : 2582-9092

अध्ययन विधि –

प्राचीन भारतीय चिंतन विचार धारा का विषलेशणात्मक एंव मौखिक पद्धिति पर आधारित है।

विशलेषण –

प्राचीन काल से लेकर वर्तमानकाल तक भारतीय चिंतन धारा मानव और प्रकृति के मध्य पाये जाने वाले संबंध की अभिव्यक्ति करना कवियों का प्रिय एवं मधुर विषय है। साहित्यदर्पणकार आचार्य कविराज विश्वनाथ ने महाकाव्य में प्रकृति चित्रण को अनिवार्य तत्व मानते हुए उसे इस प्रकार स्पष्ट किया है–

संध्या सुर्यैन्दुरजनी प्रदोषध्वान्तवासराः ।
प्रातर्मध्याहन मृगयाशैलतु वन सागराः ।।

अर्थात किसी भी महाकाव्य में संध्या सूर्य चन्द्र रात्री तारे , प्रदोष, अन्धकार, दिन, प्रातःकाल, मध्यान्ह, पर्वत, ऋतू, वन, उपवन, समुद्र, नदी, मरुस्थल, झरना, तालाब, आकाश, बादल, बिजली, जल, कमल, कुमुदिनी, पशु–पक्षी, इत्यादि का यथा स्थान कही–कही यथासंभव सांगो–पांडग चित्रण होना चाहिए ।3

नदी –

तेषां दिक्षु प्रथित विदिशा लक्षणां राजधानीं,
गत्वा सघः फलमविकलं कामुकत्वस्य लब्धा।
तीरोपान्तस्यनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मा,
त्सभ्रुमङगंःमुखमिवपयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि।।(24)

उस (दशार्ण देश) कि दिशाओं में विदिशा नाम के सुविख्यात राजधानी में जाकर (तुम्हे) शीघ्र ही कामित्व (विलासिता) का अ शेषफल (भी) मिल जायेगे, क्योकिं (तुम) वेत्रवती नदी के चंचल लहरोंवाले एवं मधुर जल को ऐसा पी ओगे जैसे तेवडी–चढे एवं मधुर मुंह को (कामुक पीते है)।

पहाड़ –

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः,
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येन भर्तुः ।
यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नान पुष्योद्केषु ,
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ।। (1)

अपने कार्य से प्रमाद (असावधानी) करने वाले (अतएव) प्रिया के वियोग के कारण दुःसह एवं वर्ष तक भोगने योग्य स्वामी के शाप द्वारा (अपनी) अपनी महिमा से वंचित किये गए किसी यक्ष ने जनकपुत्री (सीता) के स्नानो से पवित्र हुए जल वाले तथा घने छायादार वृक्षों से युक्त रामगिरी के आश्रमों में डेरा डाला । (1)

ISSN : 2582-9092

पठार –

त्वययायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञैः,
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः प्रियमानः।
सघः सीरोत्कषणसुरभिः क्षेत्रमारूह्मयमालं,
किञ्चित्पश्चाद् व्रजलघुगतिर्भूय एवोत्तरेण।। (16)

खेती का फल (अन्नादिक) तुम पर निर्भर है इस कारण ग्रामीण स्त्रियों की भौहों के विलास से अपरिचित प्रेम भरी आँखों से देखे जाते हुये (तुम) 'माल' नामक पठार पर शीघ्र ही ऐसा चढ़कर जिससे की हल चलने से सुगन्धित पैदा हो जाये कुछ पश्चिम को जाना फिर शीघ्रगति (होते हुए) तुम उत्तर की ओर (मुड़ जाना) । (16)

आकाश –

त्वामारुढ पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः,
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताःप्रत्ययादाश्वसन्त्यः।
कःसंनद्धेविरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां,
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः।। (8)

आकाश में उमड़े हुये तुमको पथिकों कि स्त्रियाँ (पतियों के घर लौट आने के) विश्वास से आशापूर्ण होकर बालों के अग्रभाग को ऊपर लिए हुए देखेंगी। तुम्हारे उमड़ आने से विरह से व्याकुल हुई पत्नी की उपेक्षा दूसरा कौन व्यक्ति करे जिसकी आजीविका मेरी तरह दूसरों के अधीन न हो ? (अर्थात कोई नही)। (8)

चांदनी–

यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपानित्यपुष्पा,
हंसश्रेणीरचितरशना नित्यपद्म नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा,
नित्यज्योत्सनाप्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः।। (3)

जहाँ (अलका में) वृक्ष सदा पुष्पों से युक्त (अतएव) मतवाले भौरों से गुंजायमान हैं , कमल लतायें (या बावलियाँ) नित्य कमलो वाली (अतएव) हंसों की पंक्तियों की मेखला (तगड़ी) बांधे हुये है, चमकते हुये पंखोवाले पालतू मोर शब्द करते समय गर्दन ऊपर उठाये रहते है , और रात अंधकार दूर होने के कारण छिटकी हुई चांदनी वाली (अतएव) परम सुहावनी होती है। (3)

ISSN : 2582-9092

चन्द्रमा–

ज्योतिर्लैखावलयि गलितं यस्य बर्हभवानी,
पुत्रप्रेम्णाकुवलयदलप्रापिकर्णेकरोति।
धौतापाङंग हरशशिरुचापावकेस्तंमयूरं,
पश्चादद्रिग्रहणगुरु भिर्गजितैर्नर्तयेथाः।। (46)

तदन्तर (तुम) स्वामी कार्तिकेय के उस मोर को जिनके (स्वयं) गिरे हुये चमकती रेखाओं के चक्र वाले पंख को पार्वती पुत्र प्रेम से कमल की पंखुड़ी के साथ कान में पहनती है और जिनके आँखों की कनखियाँ शिवजी के (शिर पर स्थित) चन्द्रमा की चमक से (और भी अधिक) श्वेत रहती है देवगिरी (अद्री) में गुंजन से बड़े हुये गर्जनों द्वारा नचाना। (46)

वायु–

मन्दं मन्दं नुदतिपवनश्चानुकुलो यथा त्वां,
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगर्वः।
गर्भधानकण परिचयान्नूनमाबद्धमालाः,
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः।। (10)

अनुकूल पवन तुझे धीरे–धीरे ठीक ही ले जा रहा है , यह अभिमानी चातक तेरी बाँई ओर स्थित होकर मीठा–मीठा बोल रहा है गर्भाधान के आनद के अभ्यास के कारण आकाश में पङ्क्तियां बांधे हुये बगुलियाँ आँखों को सुंदर लगने वाले तेरे पास अवश्य पहुँचेगी।(10)

मेघ–

जातं वशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां ,
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरुपं मघोनः ।
तेनार्थित्वंत्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं ,
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाघमेलब्ध कामा ।।

(हे! मेघ) मै जानता हूँ कि तुम भुवनों में प्रसिद्व पुष्कर और अवर्तकों के कुल में पैदा हुये हो , इच्छा के अनुसार रूप धारण करने वाले इंद्र के प्रधान पुरुष हो, इसलिए भाग्यवश दूर–बन्धु (स्त्री) वाला मै तुम्हारा याचक बना हूँ । अधिक गुणवाले (व्यक्ति) के प्रति की गई प्रार्थना निष्फल हुई (भी) अच्छी है, नीच के प्रति सफल हुई (भी) अच्छी है। (6)

ISSN : 2582-9092

बिजली–

वक्रःपन्था यदपि भवतःप्रस्थितस्योन्तराशां,
सौधात्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भुरुज्जयिन्याः।
विद्युत दामस्फुरण चकितैस्तत्र पौराङ्गनानां,
लोलापाङ्गैर्यदि न रमससे लोचनैर्वञ्चितोऽसि।। (27)

उत्तर दिशा कि ओर जाते हुए तुम्हारा मार्ग यदपि टेढा पड़ेगा (तथापि) उज्जयिनी के महलों के ऊपर वाले वाले भागों का परिचय प्राप्त करने से विमुख न होना । वहाँ (उज्जयिनी में) बिजली कि रेखाओ कि चमक से भौचक्की (डरी) हुई नगर किनारियों की चंचल कनखियों वाली आंखो का यदि तुमने आनंद नही लिया तो तुम (जीवन सफलता से) अपने को वंचित ही समझो।(27)

वर्षा–

तस्यास्तिक्तै र्वनगज मदैर्वासितं वान्तवृष्टि ,
र्जम्बू कुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः ।
अन्तःसारं धन!तुलयितुं नानिलःशक्ष्यति त्वां ,
रिक्तःसर्वो भवति हि लघुः पूर्णतागौरवाय।।(20)

वर्षा को उड़ेले हुए तुम जगली हाथियों के सुन्धित वालेमद से सुगन्धित (और) जामुनों के कुञ्जों द्वारा रोके गये वेग वाले उस (नर्मदा) के जल को लेकर जाना। हे मेघ ! भीतर से ठोस बने हुए तुझे वायु हिला न सकेगी , क्योकिं प्रत्येक खाली वस्तु हल्की होती हैं (और) भरापन गुरुता के लिए (होता है)। (20)

रात्रि वर्णन–

रात्रिगच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां यत्र नक्तं,
रुद्वालो के नरपतिपथे सुचिमेघैस्तमोभिः।
सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वो,
तोयोत्सर्गस्तननितमुखरो मा च भूर्विक्लवास्ताः।।

वहाँ (उज्जयिनी) रात को (अपने) प्रेमियों के घरों को जाती हुई स्त्रियों को घने अंधकार के कारण न दिखाई देने वाले राजमार्ग में कसौटी पर सोने की रेखा के समान चमकने वाली बिजली द्वारा भूमि दिखाना और बरसने एवं गरजने का शब्द न करना, क्योकिं वे डरपोक होती है । (39)

ISSN : 2582-9092

ऋतुवर्णन–

तस्मिन्द्रौकतिचिद बला विप्रयुक्तः स कामी,
नीत्वा मासान्कनकवलय भ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथम दिवसेमे घमाश्लिष्टसानुं,
वप्रकीड़ापरिणत गज प्रेक्षणीयं ददर्श।। (2)

प्रिया के बिछडे हुए (कृशता के कारण) सोने के कड़े के गिरजाने से शून्य कलाई वाले,उस कामी ने कुछ महीने उस पहाड़ पर बिताकर , आषाढ के पहले दिन पहाड़ की चोटी से सटे हुये बादल को देखा , जो की टीले से मिट्टी उखाडने के खेल में तिरछे दांतों से प्रहार करते हुए हाथी के समान दिखाई दे रहा था । (2)

निष्कर्ष :–

महाकवि कालिदास– कृत प्रकृति वर्णन संस्कृत साहित्य में ही नही अपितु विश्व साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । महाकवि ने देश, काल, वनोपवन, पर्वत, सरिता, सागर, आश्रम व ऋतु वर्णन इत्यादि क्षत्रों में प्रकृति वर्णन प्रस्तुत किये हैं अतः कालिदास प्रकृति के सच्चे एवं अद्वितीय उपासक हैं। महाकवि कालिदास ने मेघदूत में सारा का सारा प्रकृति में नायिकत्व की कोमल भवाना का एक वृहद निदर्शन हैं । जिसमे सरसता, सहृदयता और प्रेम स्त्रोत अनवरत फुट रहा है । जो दुःखाकुल मानव हृदय को आशा और सांत्वना का सन्देश दे रही है। यदि प्रकृति नटि का रूप धारण कर विविध रूप लेकर परिवर्तन न हो तब मानव जीवन पूर्ण रूप से असंमजस्य, नीरस हो जायेगा ।

महाकवि कालिदास प्रकृति चित्रण संस्कृत साहित्य में अद्वितीय हैं। वे केवल मानव सौन्दर्य के ही नही अपितु प्रकृति सौन्दर्य के भी उपासक हैं । उन्होंने प्रकृति के आलम्बन और उद्दीपन दोनों पक्षों का सुंदर चित्रण किया हैं ।

संदर्भग्रंथ सूची :–

1. **प्रतियोगिता साहित्य सीरिज** – डॉ मुरारीलाल (390), साहित्य भवन पब्लिकेशन, हास्पिटल रोड, आगरा– 282003
2. **आप्टे शिवराम वामन संस्कृत** – हिंदी शब्दकोश प्रका. पृष्ठ –684, अशोक प्रकाशन–2615 नई सड़क, दिल्ली–6
3. **साहित्य दर्पण** – विश्वनाथ– 6ध्322
4. **मेघदूत** –महाकवि कालिदास मोतीलाल, बनारसीदास, 41 यू. ए. बग्लोरोड जवाहरनगर, दिल्ली– 110007

ISSN : 2582-9092

5. मेघदूत– 46 –नदी
6. मेघदूत– 1 –पहाड़
7. मेघदूत– 31–पठार
8. मेघदूत– 15 –आकाश
9. मेघदूत– 14 –चाँदनी
10. मेघदूत– 92 –चन्द्रमा
11. मेघदूत– 19 –वायु
12. मेघदूत– 12 –मेघ
13. मेघदूत– 3 –बादल
14. मेघदूत– 54 –बिजली
15. मेघदूत– 38 –वर्षा
16. मेघदूत– 204 –रात्रि
17. मेघदूत– 5 – ऋतु

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत)
इंदिरा गाँधी शासकीय कला एवं
वाणिज्य स्नातकोत्तर महविद्यालय
वैशालीनगर, भिलाई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)